प्रश्नकोश

1. जैन धर्म के संस्थापक हैं–

(a) आर्य सुधर्मा
(b) महावीर स्वामी
(c) पार्श्वनाथ
(d) ऋषभदेव

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर–(d)

जैन धर्म के मूल संस्थापक या प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ माने जाते हैं। महावीर स्वामी जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे, जिन्होंने छठी शताब्दी ई.पू. में जैन धर्म का प्रसार किया।

2. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन थे?

(a) पार्श्वनाथ
(b) ऋषभदेव
(c) महावीर
(d) चेतक
(e) त्रिशाल

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2013

उत्तर–(b)

Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. जैन 'तीर्थंकर' पार्श्वनाथ निम्नलिखित स्थानों में से मुख्यतः किससे संबंधित थे?

(a) वाराणसी (b) कौशाम्बी

(c) गिरिव्रज (d) चम्पा

U.P.P.C.S (Mains) 2016

उत्तर—(a)

पार्श्वनाथ तेईसवें जैन तीर्थंकर हैं। इनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन के यहां हुआ था। इनकी माता का नाम वामा देवी था। इनका प्रतीक चिह्न सर्प है।

4. सूची-I को सूची -II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए -

सूची-I (तीर्थंकर)	सूची-II (प्रतिमा लक्षण)
A. आदिनाथ	1. वृषभ
B. मल्लिनाथ	2. अश्व
C. पार्श्वनाथ	3. सर्प
D. संभवनाथ	4. जल-कलश

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	4	3	2
(b)	1	3	2	4
(c)	2	4	3	1
(d)	3	1	4	2

U.P.P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर—(a)

सूची-I एवं सूची-II का सुमेलन निम्नवत है-

सूची-I (तीर्थंकर)	सूची-II (प्रतिमा लक्षण)
आदिनाथ	वृषभ
मल्लिनाथ	जल-कलश
पार्श्वनाथ	सर्प
संभवनाथ	अश्व

5. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I (तीर्थंकर)	सूची-II (उनके संज्ञान)
(A) पार्श्वनाथ	(i) वृषभ
(B) आदिनाथ	(ii) सिंह
(C) महावीर	(iii) सर्प
(D) शांतिनाथ	(iv) हिरण

कूट :

(a) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)

(b) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)

(c) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)

(d) A-(iii), B-(i), C-(ii), D-(iv)

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2021

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I (तीर्थंकर)	सूची-II (उनके संज्ञान)
पार्श्वनाथ	सर्प
आदिनाथ	वृषभ
महावीर	सिंह
शांतिनाथ	हिरण

6. निम्नलिखित में से कौन-सा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है?

	(तीर्थंकर)		(निर्वाण स्थल)
(a)	ऋषभनाथ	—	अष्टापद
(b)	वासुपूज्य	—	सम्मेदशिखर
(c)	नेमिनाथ	—	ऊर्जयंत
(d)	महावीर	—	पावापुरी

U.P.P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर—(b)

वासुपूज्य जैन धर्म के 12वें तीर्थंकर थे। इनको निर्वाण चम्पापुरी में प्राप्त हुआ था। शेष सभी युग्म सही सुमेलित हैं।

7. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (स्थल)	सूची-II (संबंधित तीर्थंकर)
A. श्रावस्ती	1. ऋषभनाथ
B. काकंदी	2. पद्मप्रभु
C. अयोध्या	3. सुविधिनाथ
D. पभोसा	4. संभवनाथ

	A	B	C	D
(a)	3	1	2	4
(b)	2	4	1	3
(c)	4	3	1	2
(d)	3	2	4	1

U.P.R.O./A.R.O (Mains) 2021

उत्तर—(c)

Scanned with OKEN Scanner

सही सुमेलन इस प्रकार है–

सूची-I (स्थल)	सूची-II (संबंधित तीर्थंकर)
श्रावस्ती	संभवनाथ
काकंदी	सुविधिनाथ (पुष्पदंत)
अयोध्या	ऋषभनाथ
पभोसा	पद्मप्रभु (पद्मप्रभ)

8. निम्नलिखित तीर्थंकरों पर विचार कीजिए तथा उनको सही कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए :

I. अभिनंदन **II. विमल नाथ**
III. मुनिसुब्रत नाथ **IV. पद्मप्रभ**

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

कूटः

(a) I, IV, II और III (b) III, I, II और IV
(c) IV, III, I और II (d) IV, I, III और II

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2016

उत्तर–(a)

जैन संस्थापकों को तीर्थंकर, जबकि जैन महात्माओं को निर्ग्रंथ कहा गया। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं, जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया। ये हैं - 1. ऋषभदेव, 2. अजितनाथ, 3. संभवनाथ, 4. अभिनंदन, 5. सुमतिनाथ, 6. पद्मप्रभ, 7. सुपार्श्वनाथ, 8. चंद्रप्रभ, 9. पुष्पदंत (सुविधिनाथ), 10. शीतलनाथ, 11. श्रेयांसनाथ, 12. वासुपूज्य, 13. विमलनाथ, 14. अनंतनाथ, 15. धर्मनाथ, 16. शांतिनाथ, 17. कुंथुनाथ, 18. अरनाथ, 19. मल्लिनाथ, 20. मुनि-सुव्रत, 21. नमिनाथ, 22. नेमिनाथ या अरिष्टनेमि, 23. पार्श्वनाथ एवं 24. महावीर स्वामी।

9. महावीर स्वामी का जन्म कहां हुआ था?

(a) कुंडग्राम में (b) पाटलिपुत्र में
(c) मगध में (d) वैशाली में

42nd B.P.S.C. (Pre) 1997
47th B.P.S.C. (Pre) 2005
53rd to 55th B.P.S.C. (Pre) 2011

उत्तर–(a)

महावीर स्वामी का जन्म कुंडग्राम या कुंडलपुर में (वैशाली के निकट) लगभग 599 ई.पू. में हुआ था। उनकी माता त्रिशला वैशाली के लिच्छवी गणराज्य के प्रमुख चेटक की बहन थीं तथा पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे। उनके बड़े भाई नंदिवर्धन थे। कुछ प्राचीन संस्करण की NCERT पुस्तकों में महावीर स्वामी का जन्म 540 ई.पू. उद्धृत है। इसी आधार पर अनेक प्रकाशकों ने भी यही जन्म तिथि अपनी पुस्तकों में अंकित किया है, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न हुई है। महावीर स्वामी की सही जन्म तिथि 599 ई.पू. ही उचित है, क्योंकि महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध के पहले के काल के हैं। महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. है। NCERT के नवीन संस्करणों में भी अब महावीर स्वामी का जन्म 599 ई.पू. प्रकाशित हो चुका है।

10. कुंडलपुर जन्म स्थान है–

(a) सम्राट अशोक का (b) गौतम बुद्ध का
(c) महावीर स्वामी का (d) चैतन्य महाप्रभु का

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2004

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर जी का मोक्ष स्थान कहां स्थित है?

(a) मनेर (b) राजगीर
(c) पावापुरी (d) जालन फोर्ट
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

63rd B.P.S.C. (Pre) 2017

उत्तर–(c)

जैन धर्म के प्रवर्तक महवीर स्वामी का मोक्ष स्थान (निर्वाण) पावापुरी में स्थित है। बिहार शरीफ से लगभग 8 किमी. दक्षिण-पूर्व में स्थित पावापुरी जैनियों का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। पावापुरी, बिहार के नालंदा से लगभग 25 किमी. दूर स्थित है। भगवान महावीर ने 527 ई.पू., अर्थात 72 वर्ष की आयु में बिहार के पावापुरी में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया।

12. महावीर जैन की मृत्यु निम्नलिखित में से किस नगर में हुई?

(a) राजगीर (b) सांची
(c) पावापुरी (d) समस्तीपुर

45th B.P.S.C. (Pre) 2001

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. तीर्थंकर शब्द संबंधित है–

(a) बौद्ध (b) ईसाई
(c) हिंदू (d) जैन

U.P.P.C.S. (Pre) 1993

उत्तर–(d)

'तीर्थंकर' शब्द जैन धर्म से संबंधित है। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं, जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।

Scanned with OKEN Scanner

14. जैन तीर्थंकरों के क्रम में अंतिम कौन था?

(a) पार्श्वनाथ (b) ऋषभदेव

(c) महावीर (d) मणिसुव्रत

I.A.S. (Pre) 1993

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में से कौन एक जैन तीर्थंकर नहीं था?

(a) चंद्रप्रभु (b) नाथमुनि

(c) नेमि (d) संभव

U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2004

उत्तर–(b)

नाथमुनि जैन तीर्थंकर नहीं थे। विकल्प में दिए शेष सभी जैन तीर्थंकर थे।

16. प्रभासगिरि जिनका तीर्थ स्थल है, वे हैं -

(a) बौद्ध (b) जैन

(c) शैव (d) वैष्णव

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2008

उत्तर–(b)

प्रभासगिरि उ.प्र. के कौशाम्बी में स्थित जैन तीर्थ स्थल है। कौशाम्बी का प्रभासगिरि स्थल छठवें जैन तीर्थंकर पद्मप्रभ, से संबंधित है।

17. जैन धर्म में 'पूर्ण ज्ञान' के लिए क्या शब्द है?

(a) जिन (b) रत्न

(c) कैवल्य (d) निर्वाण

I.A.S. (Pre) 1993

उत्तर–(c)

जैन धर्म में 'पूर्ण ज्ञान' के लिए कैवल्य शब्द का प्रयोग किया गया है। महावीर स्वामी को 12 वर्षों की कठोर तपस्या तथा साधना के पश्चात जृम्भिकाग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ था, फलतः वे 'केवलिन' कहलाए।

18. महावीर स्वामी को किस नदी के तट पर ज्ञानोदय प्राप्त हुआ था?

(a) स्वर्णसिक्ता (b) पलाशिनी

(c) गंगा (d) ऋजुपालिका

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2017

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. त्रिरत्न सिद्धांत सम्यक् धारण, सम्यक् चरित्र एवं सम्यक् ज्ञान जिस धर्म की महिमा है, वह है–

(a) बौद्ध धर्म (b) ईसाई धर्म

(c) जैन धर्म (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Pre) 2004

उत्तर–(c)

जैन धर्म में मोक्ष के लिए तीन आवश्यक साधन बताए गए हैं–सम्यक् धारण (दर्शन), सम्यक् चरित्र एवं सम्यक् ज्ञान। इन तीनों को जैन धर्म में 'त्रिरत्न' की संज्ञा दी गई है।

20. त्रिरत्न या तीन रत्न, जैसे सटीक ज्ञान, सच्ची आस्था और सटीक क्रिया, निम्न में से किससे संबंधित हैं?

(a) बौद्ध धर्म (b) हिंदू धर्म

(c) जैन धर्म (d) ईसाई धर्म

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

66th B.P.S.C. (Pre) 2020

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. कौन-सा दर्शन त्रिरत्न को मानता है?

(a) बौद्ध दर्शन (b) न्याय दर्शन

(c) योग दर्शन (d) जैन दर्शन

(c) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर–(*)

जैन धर्म (जैन दर्शन) में मोक्ष के लिए तीन साधन आवश्यक बताए गए हैं, ये हैं–सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चरित्र। इन तीनों को जैन धर्म में 'त्रिरत्न' की संज्ञा दी गई है। बुद्ध, धम्म एवं संघ बौद्ध धर्म (बौद्ध दर्शन) के 'त्रिरत्न' माने जाते हैं। अतः छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

22. अणुव्रत सिद्धांत का प्रतिपादन किया था–

(a) महायान बौद्ध संप्रदाय ने

(b) हीनयान बौद्ध संप्रदाय ने

(c) जैन धर्म ने

(d) लोकायत शाखा ने

I.A.S. (Pre) 1995

उत्तर–(c)

जैन धर्म में पंच महाव्रत–अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय एवं अपरिग्रह की व्यवस्था की गई है। जैन धर्म में गृहस्थों के लिए पंच महाव्रत अणुव्रत के रूप में व्यवहृत हुआ है, क्योंकि संसार में रहते हुए इन महाव्रतों का पूर्णतः पालन करना संभव नहीं, इसलिए आंशिक रूप से इन अणुव्रत के पालन हेतु कहा गया है। ये पंच अणुव्रत हैं– (1) अहिंसाणुव्रत, (2) सत्याणुव्रत, (3) अस्तेयाणुव्रत, (4) ब्रह्मचर्याणुव्रत और (5) अपरिग्रहाणुव्रत।

Scanned with OKEN Scanner

23. **स्याद्‌वाद सिद्धांत है–**

(a) लोकायत धर्म का (b) शैव धर्म का

(c) जैन धर्म का (d) वैष्णव धर्म का

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2005

उत्तर–(c)

महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे, इन्होंने वेदों की अपौरुषेयता स्वीकार करने से इनकार कर दिया तथा धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियों एवं पाखंडों का विरोध किया। उन्होंने आत्मवादियों तथा नास्तिकों के एकांतिक मतों को छोड़कर बीच का मार्ग अपनाया, जिसे 'अनेकांतवाद' अथवा 'स्याद्‌वाद' कहा गया। स्याद्‌वाद को सप्तभंगी नय के नाम से भी जाना जाता है। यह ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है।

24. **'स्याद्‌वाद' संबंधित है–**

(a) चार्वाक से (b) जैन से

(c) बौद्ध से (d) सांख्य से

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2018

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. **निम्नलिखित में से कौन-कौन से सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित हैं?**

(i) अनेकांतवाद **(ii) सर्वस्तिवाद**

(iii) शून्यवाद **(iv) स्याद्‌वाद**

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए-

(a) (i) एवं (iv) (b) (ii) एवं (iv)

(c) (i), (ii) एवं (iii) (d) (ii) एवं (iii)

R.A.S./R.T.S (Pre) 2021

उत्तर–(a)

'अनेकांतवाद' अथवा 'स्यादवाद' जैन धर्म से संबंधित हैं। महावीर स्वामी ने आत्मवादियों तथा नास्तिकों के एकांतिक मतों को छोड़कर बीच का मार्ग अपनाया, जिसे 'अनेकांतवाद' या 'स्याद्‌वाद' कहा गया। स्याद्‌वाद को 'सप्तभंगीनय' भी कहा जाता है। यह ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है। 'शून्यवाद' बौद्ध धर्म का एक संप्रदाय है, जिसके प्रवर्तक 'नागार्जुन' हैं, जबकि 'सर्वस्तिवाद', बौद्ध दर्शन का एक संप्रदाय है, जिसका मानना है कि तीनों काल में संसार की सभी वस्तुओं का अस्तित्व है। इसे 'वैभाषिक' भी कहते हैं। अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।

26. **जैन दर्शन के अनुसार, सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण -**

(a) सार्वभौमिक विधान से हुआ है।

(b) सार्वभौमिक सत्य से हुआ है।

(c) सार्वभौमिक आस्था से हुआ है।

(d) सार्वभौमिक आत्मा से हुआ है।

I.A.S. (Pre) 2011

उत्तर–(a)

जैन दर्शन के अनुसार, समस्त विश्व जीव तथा अजीव नामक दो नित्य एवं स्वतंत्र तत्वों से मिलकर बना है। जीव चेतन तत्व है, जबकि अजीव अचेतन जड़ तत्व है। यहां जीव से तात्पर्य उपनिषदों की सार्वभौमिक आत्मा से न होकर व्यक्तिगत आत्मा से है। जैन मतानुसार, आत्माएं अनेक होती हैं तथा सृष्टि के कण-कण में जीवों का वास है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर है, जिसमें उल्लिखित है कि जैन दर्शन के अनुसार, सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण सार्वभौमिक विधान से हुआ है। इसका कोई संचालक या नियंत्रणकर्ता नहीं है।

27. **अनेकांतवाद निम्नलिखित में से किसका क्रोड सिद्धांत एवं दर्शन है?**

(a) बौद्ध मत (b) जैन मत

(c) सिख मत (d) वैष्णव मत

I.A.S. (Pre) 2009

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर–(b)

अनेकांतवाद जैन धर्म का क्रोड सिद्धांत एवं दर्शन है। इसे सप्तभंगी सिद्धांत भी कहते हैं।

28. **निम्नलिखित में से कौन-सा धर्म 'विश्व विनाशकारी प्रलय' की अवधारणा में विश्वास नहीं करता?**

(a) बौद्ध धर्म (b) जैन धर्म

(c) हिंदू धर्म (d) इस्लाम

U.P.P.C.S. (Mains) 2014

उत्तर–(b)

जैन धर्म में ईश्वर की कल्पना नहीं की गई है। इस धर्म के अनुसार, जगत की सृष्टि नहीं की गई है, यह संसार नित्य और शाश्वत है, इसमें किसी समय प्रलय नहीं होता है।

29. **जैन धर्म का आधारभूत बिंदु है–**

(a) कर्म (b) निष्ठा

(c) अहिंसा (d) विराग

U.P.P.C.S. (Pre) 1993

उत्तर–(c)

अहिंसा जैन धर्म का आधारभूत बिंदु है। जैन धर्म में सम्यक् चरित्र के अंतर्गत परिव्राजकों अथवा तापसों के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह नामक पंच महाव्रत की व्यवस्था की गई है।

30. **यापनीय किसका एक संप्रदाय था?**

(a) बौद्ध धर्म का (b) जैन धर्म का

(c) शैव धर्म का (d) वैष्णव धर्म का

U.P.P.C.S (Pre) 2010

उत्तर–(b)

Scanned with OKEN Scanner

'यापनीय' जैन धर्म का एक संप्रदाय था, जिसकी उत्पत्ति यद्यपि दिगंबर संप्रदाय से हुई थी, तथापि यह संप्रदाय कतिपय श्वेतांबर मान्यताओं का भी पालन करता था।

31. भारत की धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में 'स्थानकवासी' संप्रदाय का संबंध किससे है?

(a) बौद्ध मत (b) जैन मत
(c) वैष्णव मत (d) शैव मत

I.A.S. (Pre) 2018

उत्तर–(b)

स्थानकवासी श्वेतांबर जैनों का एक संप्रदाय है। इसकी स्थापना 1653 ई. में हुई थी। यह संप्रदाय अपने पूर्ववर्ती सुधारवादी संप्रदाय 'लोंका' (Lonka), जिसकी स्थापना लोंकाशा (Lonkasha) ने की थी, से उत्पन्न हुआ। इस संप्रदाय के लोग मूर्तियों की पूजा नहीं करते।

32. निम्नलिखित में से कौन सबसे पूर्वकालिक जैन ग्रंथ कहलाता है?

(a) बारह अंग (b) बारह उपांग
(c) चौदह पूर्व (d) चौदह उपपूर्व

41st B.P.S.C. (Pre) 1995

उत्तर–(c)

'चौदह पूर्व' प्राचीनतम जैन ग्रंथ हैं। अंतिम नंद राजा के समय में सम्भूतविजय तथा भद्रबाहु जैन संघ के अध्यक्ष थे तथा ये ही महावीर द्वारा प्रदत्त चौदह पूर्वो (पुव्वों) के विषय में जानने वाले अंतिम व्यक्ति थे।

33. प्रारंभिक जैन साहित्य निम्नलिखित में से किस भाषा में लिखे गए?

(a) अर्ध-मागधी (b) पालि
(c) प्राकृत (d) संस्कृत

U.P.P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर–(a)

प्राय: सभी प्रारंभिक धार्मिक जैन साहित्य प्राकृत भाषा की विशिष्ट शाखा अर्ध-मागधी भाषा में लिखे गए हैं। इसके बारह अंग अर्ध-मागधी में ही हैं। बाद में जैन धर्म ने प्राकृत भाषा को अपनाया। ये ग्रंथ ईसा की छठी शताब्दी में गुजरात में वल्लभी नामक स्थान पर अंतिम रूप से संकलित किए गए। आज जैन साहित्य लगभग सभी भाषाओं में अनूदित है।

34. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थल पार्श्वनाथ से संबद्ध होने के कारण जैन-सिद्ध क्षेत्र माना जाता है?

(a) चम्पा (b) पावा
(c) सम्मेद शिखर (d) ऊर्जयंत

U.P.P.C.S. (Pre) 2002

U.P. Lower Sub. (Pre) 2002

उत्तर–(c)

पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे, जिनका जन्म वाराणसी में महावीर स्वामी से 250 वर्ष पहले लगभग 850 ई.पू. में हुआ था। काशी के शासक इक्ष्वाकुवंशी अश्वसेन उनके पिता थे तथा महारानी वामा उनकी माता। 30 वर्ष की आयु के बाद उन्होंने गृह त्याग कर अपना जीवन वैराग्य और तपश्चर्या में लगाया। वाराणसी के निकट आश्रमपद उद्यान में समाधिस्थ होकर कठिन तपस्या करने के उपरांत उन्हें 84वें दिन 'कैवल्य' (ज्ञान) प्राप्त हुआ। पार्श्वनाथ का परिनिर्वाण सम्मेत शिखर (सम्मेद पर्वत) पर हुआ था, इसी कारण यह जैन सिद्ध क्षेत्र माना जाता है।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा आरंभिक जैन साहित्य का भाग नहीं है?

(a) थेरीगाथा (b) आचारांगसूत्र
(c) सूत्रकृतांग (d) बृहत्कल्पसूत्र

I.A.S. (Pre) 1996

उत्तर–(a)

थेरीगाथा बौद्ध साहित्य है। आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांग और बृहत्कल्पसूत्र आरंभिक जैन साहित्य के भाग हैं।

36. जैन संप्रदाय में प्रथम विभाजन के समय श्वेतांबर संप्रदाय के संस्थापक थे–

(a) स्थूलभद्र (b) भद्रबाहु
(c) कालकाचार्य (d) देवर्धि-क्षमा श्रमण

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1999

उत्तर–(a)

मौर्य काल में मगध में अत्यंत भीषण दुर्भिक्ष (अकाल) पड़ा, फलतः वहां रहने वाले जैन संघ के भद्रबाहु श्रुतकेवली अपने अनुयायियों को लेकर दक्षिण चले गए। जैन संघ का यह भाग दक्षिण मैसूर के पुण्णाट प्रदेश में बस गया। अकाल समाप्त होने के बाद भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ पुन: यहां लौट आए। किंतु जैन संघ के नियमों को लेकर भद्रबाहु और स्थूलभद्र के बीच मत-वैभिन्य हो गया। स्थूलभद्र अकाल के समय मगध में ही रहे और उनके अनुयायी भी वहीं थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को सफेद वस्त्र धारण करने के लिए निर्देश दिया, किंतु भद्रबाहु ने निर्वस्त्र रहने के लिए अपने अनुयायियों को शिक्षा दी। इस प्रकार जैन संघ में दो संप्रदाय विकसित हुए–(i) श्वेतांबर और (ii) दिगंबर।

37. भगवान महावीर का प्रथम शिष्य था–

(a) जमालि (b) योसुद
(c) विपिन (d) प्रभाष

47th B.P.S.C. (Pre) 2005

उत्तर–(a)

Scanned with OKEN Scanner

भगवान महावीर का जन्म क्षत्रिय सामंत सिद्धार्थ के यहां 599 ईसा पूर्व में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम यशोदा था, उनसे प्रियदर्शना नामक एक पुत्री उत्पन्न हुई। उस पुत्री का विवाह जमालि नाम के क्षत्रिय से हुआ था, जो बाद में महावीर स्वामी का अनुयायी बन गया। यह उनका प्रथम शिष्य था।

38. महावीर का प्रथम अनुयायी कौन था?

(a) जमालि (b) यशोदा
(c) आणोज्जा (d) त्रिशला

U.P.P.C.S. (Pre) 2008

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. किस जैन सभा में अंतिम रूप से श्वेतांबर आगम का संपादन हुआ?

(a) वैशाली में (b) वल्लभी में
(c) पावा में (d) पाटलिपुत्र में

U.P.P.C.S. (Mains) 2008

उत्तर–(d)

चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पाटलिपुत्र में प्रथम जैन संगीति आयोजित किया गया, जिसमें श्वेतांबर आगम का संपादन किया गया। चूंकि प्राचीन जैन शास्त्र नष्ट हो गए थे, अतः उन्हें पुनः एकत्र करने के लिए चतुर्थ शताब्दी ईसा पूर्व में इस प्रथम जैन महासभा का आयोजन किया गया था, जिसमें भद्रबाहु के अनुयायियों ने भाग नहीं लिया था।

40. निम्नलिखित में से किस स्थान पर प्रथम 'जैन-परिषद' का आयोजन हुआ था?

(a) पाटलिपुत्र (b) वैशाली
(c) मथुरा (d) उज्जैन

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. जैन साहित्य से संबंधित निम्नलिखित कथनों को पढ़िए तथा सटीक विकल्प को चुनिए–

कथन I : श्वेतांबर धर्मसूत्र में 12 अंग शामिल हैं।

कथन II : श्वेतांबर परंपरा के अनुसार, इन अंगों का संकलन वल्लभी में आयोजित एक धर्मसभा में किया गया था।

(a) कथन I एवं कथन II दोनों ही सही हैं।
(b) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(c) कथन I एवं कथन II दोनों ही गलत हैं।
(d) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर–(d)

श्वेतांबर मतानुयायियों ने प्रथम जैन संगीति, जो 310 ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में हुई थी, में 12 अंगों का संकलन किया। दिगंबरों का मानना था कि महावीर की शिक्षाएं या 12 अंगों का ज्ञान लुप्त हो चुका है, इन्होंने इस सभा में भाग नहीं लिया था। अतः कथन I सत्य तथा कथन II असत्य है।

42. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–

1. वर्द्धमान महावीर की माता, लिच्छवी के मुख्य चेटक की पुत्री थीं।
2. गौतम बुद्ध की माता कोलिय राजवंश की राजकुमारी थीं।
3. 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ बनारस से थे।

इन कथनों में कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 2 तथा 3 (d) 1, 2 तथा 3

I.A.S. (Pre) 2003

उत्तर–(c)

वर्द्धमान महावीर की माता त्रिशला या विदेहदत्ता वैशाली के लिच्छवी कुल के प्रमुख चेटक की बहन थीं, न कि पुत्री। इसी कारण मातृपक्ष से वह मगध के हर्यंक शासक बिंबिसार तथा अजातशत्रु के निकट संबंधी थे। द्वितीय कथन सही है। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी (बनारस) में भगवान महावीर से लगभग 250 वर्ष पूर्व हुआ था। इस प्रकार विकल्प (c) सही उत्तर है।

43. प्राचीन जैन धर्म के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही है?

(a) स्थूलबाहु के नेतृत्व में दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार हुआ।
(b) 'पाटलिपुत्र' में हुई परिषद के पश्चात जो जैन धर्म के लोग भद्रबाहु के नेतृत्व में रहे, वे श्वेतांबर कहलाए।
(c) प्रथम शतक ई.पू. में जैन धर्म को कलिंग के राजा खारवेल का समर्थन मिला।
(d) बौद्धों के विपरीत जैन धर्म की प्रारंभिक अवस्था में, जैन धर्म के लोग चित्रों का पूजन करते थे।

I.A.S. (Pre) 2004

उत्तर–(c)

उपर्युक्त कथनों में केवल विकल्प (c) सत्य है। दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार आचार्य भद्रबाहु एवं उनके शिष्यों द्वारा हुआ था। भद्रबाहु के समर्थक दिगंबर कहलाए, इन्होंने पाटलिपुत्र में आयोजित जैन धर्म की प्रथम महासभा में भाग नहीं लिया था। जबकि कलिंग का चेदि वंशीय शासक खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था, उसने जैन साधुओं को संरक्षण प्रदान किया और उनके निर्वाह के लिए प्रभूत दान दिए तथा उनके रहने के लिए आरामदायक निवास स्थान बनवाए। उसने

Scanned with OKEN Scanner

भुवनेश्वर के पास उदयगिरि तथा खंडगिरि पहाड़ियों को कटवाकर जैन भिक्षुओं के निवास के लिए गुहा विहार बनवाए थे। जैन धर्म की प्रारंभिक अवस्था में चित्र पूजा या मूर्ति पूजा प्रचलित नहीं थी।

44. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन जैन सिद्धांत के अनुरूप है/हैं?

1. कर्म को विनष्ट करने का सुनिश्चित मार्ग तपश्चर्या है।

2. प्रत्येक वस्तु में, चाहे वह सूक्ष्मतम कण हो, आत्मा होती है।

3. कर्म आत्मा का विनाशक है और अवश्य इसका अंत करना चाहिए।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 2 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2013

उत्तर–(d)

जैन सिद्धांत के अनुसार, सृष्टि के कण-कण में जीवों का वास है। इस सिद्धांत में कर्म को बंधन का कारण तथा 'सूक्ष्मतत्व भूततत्व' माना गया है, जो जीव में प्रवेश कर उसे नीचे संसार की ओर खींच लाता है। जब कर्म का जीव की ओर प्रवाह रुक जाता है, तो उस अवस्था को 'संवर' कहते हैं तथा जब जीव में पूर्व मौजूद कर्मों का विनाश होने लगता है, तो उस अवस्था को 'निर्जरा' कहते हैं। जैनियों का विश्वास है कि प्रत्येक जीव अपने पूर्व संचित कर्मों के अनुसार ही शरीर धारण करता है, जब जीव से कर्म का अवशेष बिल्कुल समाप्त हो जाता है, तो उस स्थिति को जैन धर्म में 'मोक्ष' कहते हैं। जैन धर्म में मोक्ष के लिए तीन आवश्यक साधन बताए गए हैं, जिन्हें त्रिरत्न (सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चरित्र) कहा जाता है। महावीर ने मोक्ष के लिए कठोर तपश्चर्या एवं कायाक्लेश पर भी बल दिया है। मोक्ष के पश्चात जीव आवागमन के चक्र से छुटकारा पा जाता है तथा वह 'अनंत चतुष्ट्य' (अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य तथा अनंत सुख) की प्राप्ति कर लेता है।

45. "समाधि मरण" किस दर्शन से संबंधित है?

(a) बौद्ध दर्शन (b) जैन दर्शन

(c) योग दर्शन (d) लोकायत दर्शन

(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2015

उत्तर–(b)

सल्लेखना (समाधि मरण या संथारा) जीवन के अंतिम समय में मृत्यु निकट जानकर स्वेच्छा से अपनाई जाने वाली एक जैन प्रथा है। व्यक्ति को यह लगने लगता है कि वह मृत्यु के करीब है, तो वह खुद खाना-पीना त्याग देता है। इसे दिगंबर जैन शास्त्र के अनुसार **समाधि मरण** या सल्लेखना कहा जाता है। श्वेतांबर साधना पद्धति में इसे 'संथारा' कहा जाता है।

46. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -

1. दक्षिण भारत के इक्ष्वाकु शासक बौद्धमत के विरोधात्मक थे।

2. पूर्वी भारत के पाल शासक बौद्धमत के समर्थक थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) दोनों 1 और 2 (d) न ही 1 और 2

I.A.S. (Pre) 2006

उत्तर–(b)

दक्षिण में तृतीय और चतुर्थ शताब्दी ई. के दौरान आंध्र में इक्ष्वाकु वंश का शासन था। इस वंश में कुल 7 शासक हुए, जिनकी लगभग सभी रानियां बौद्ध मतावलंबी थीं। यहां नागार्जुनकोंडा स्थित मूर्तियों में बुद्ध की विशाल मूर्तियां शामिल हैं। यद्यपि इक्ष्वाकुओं ने वैदिक धर्म का पालन किया, किंतु इन्होंने साथ ही बौद्ध धर्म का समर्थन भी किया। बंगाल में पाल शासन के दौरान बंगाल महत्वपूर्ण बौद्ध केंद्र के रूप में उभरा। ऐसा पाल वंश द्वारा बौद्ध मत के समर्थन के कारण संभव हुआ। स्पष्ट है कि कथन (1) गलत है और कथन (2) सही है।

47. 'आजीवक' संप्रदाय के संस्थापक थे–

(a) आनंद (b) राहुलभद्र

(c) मक्खलिगोसाल (d) उपालि

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

उत्तर–(c)

मक्खलिगोसाल प्रारंभ में महावीर के शिष्य थे, किंतु बाद में मतभेद के चलते इन्होंने महावीर की शिष्यता त्याग दी इन्हें आजीवक सम्प्रदाय का वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है। इनका मत 'नियतिवाद' कहा जाता है, जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है।

48. निम्नलिखित में से किसने प्रतिपादित किया कि भाग्य ही सब कुछ निर्धारित करता है, मनुष्य असमर्थ होता है?

(a) जैनियों ने (b) बौद्धों ने

(c) आजीवकों ने (d) मीमांसकों ने

U.P.P.C.S. (Pre) 2006

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. संप्रदाय, जो नियति की अटलता में विश्वास करता था–

(a) जैन (b) आजीवक

Scanned with OKEN Scanner

(c) चार्वाक (d) बौद्ध

R.A.S./R.T.S. (Pre) (Re-Exam) 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए -

सूची - I (आचार्य)	सूची -II (सिद्धांत)
A. लकुलीश	1. आजीवक
B. नागार्जुन	2. शून्यवाद
C. भद्रबाहु	3. पाशुपत
D. गोसाल	4. जैन

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	3	4	1
(b)	3	2	4	1
(c)	1	2	3	4
(d)	3	1	4	2

U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2017

उत्तर—(b)

सूची - I का सूची - II से सुमेलन इस प्रकार है -

सूची - I (आचार्य)	सूची -II (सिद्धांत)
लकुलीश	पाशुपत
नागार्जुन	शून्यवाद
भद्रबाहु	जैन
गोसाल	आजीवक

51. बराबर की गुफाओं का उपयोग किसने आश्रयगृह के रूप में किया?

(a) आजीवकों ने (b) थारुओं ने

(c) जैनों ने (d) तांत्रिकों ने

40th B.P.S.C. (Pre) 1995

उत्तर—(a)

मौर्य युग में पर्वत गुफाओं को काटकर निवास स्थान बनाने की कला का पूर्ण विकास हुआ। अशोक तथा उसके पौत्र दशरथ के समय में बराबर तथा नागार्जुनी पहाड़ियों को काटकर आजीवकों के लिए आवास बनाए गए थे। अशोक के समय की बराबर पहाड़ी में बनी गुफाओं में 'सुदामा की गुफा' तथा 'कर्ण चौपड़' नामक गुफा सर्वप्रसिद्ध हैं।

52. उत्तर प्रदेश में बौद्ध एवं जैनियों दोनों की प्रसिद्ध तीर्थस्थली है—

(a) सारनाथ (b) कौशाम्बी

(c) कुशीनगर (d) देवीपाटन

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2007

U.P.U.D.A./L.D.A. (Mains) 2010

उत्तर—(b)

प्रयागराज (इलाहाबाद) के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 33 मील की दूरी पर स्थित कोसम नामक स्थान ही प्राचीन काल का कौशाम्बी था। वैदिक एवं जैन साहित्य में अनेक बार कौशाम्बी का उल्लेख हुआ है। पुराणों के अनुसार, हस्तिनापुर के राजा निचक्षु ने हस्तिनापुर के गंगा के प्रवाह में बह जाने के बाद इस नगर की स्थापना करवाई थी। जैन ग्रंथ के अनुसार, कुशाम्ब नामक वृक्षों के अधिकता के कारण इस नगर का नाम कौशाम्बी पड़ा। यह नगर जैन तथा बौद्ध दोनों की प्रसिद्ध तीर्थस्थली है। महात्मा बुद्ध ने इस नगर में जाकर कई बार धर्मोपदेश दिया तथा लोगों को अपना शिष्य बनाया। यहां अनेक विहार थे। सर्वप्रमुख घोषिताराम विहार था, जिसका निर्माण श्रेष्ठि घोषित ने करवाया था तथा जैन धर्म के छठे तीर्थंकर पद्मप्रभ का प्रसिद्ध मंदिर प्रभाषगिरि यहीं अवस्थित है।

53. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सही नहीं है?

(a) श्रवणबेलगोला स्थित गोमतेश्वर की प्रतिमा जैनियों के अंतिम तीर्थंकर को दर्शाती है।

(b) भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ अरुणाचल प्रदेश में है।

(c) खजुराहो के मंदिर चंदेल राजाओं द्वारा बनवाए गए।

(d) होयसलेश्वर मंदिर शिव को समर्पित है।

I.A.S. (Pre) 2002

उत्तर—(a)

श्रवणबेलगोला कर्नाटक राज्य में स्थित है। यहां गंग शासक रचमल्ल चतुर्थ (पंचमल्ल) के शासनकाल में चामुंडराय नामक मंत्री ने लगभग 981 ई. में बाहुबली (गोमतेश्वर) की विशालकाय (57 फीट ऊंची) जैन मूर्ति का निर्माण कराया। बाहुबली प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र माने जाते हैं। अन्य तीनों कथन सही हैं।

54. श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर की विशाल प्रतिमा किसने स्थापित करवाई थी?

(a) चामुंडराय ने

(b) कृष्ण प्रथम ने

(c) कुमारपाल ने

(d) तेजपाल ने

U.P. Lower Sub.(Pre) 2009

I.A.S. (Pre) 1994

उत्तर—(a)

Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. महान धार्मिक घटना, महामस्तकाभिषेक, निम्नलिखित में से किससे संबंधित है और किसके लिए की जाती है?

(a) बाहुबली (b) बुद्ध

(c) महावीर (d) नटराज

I.A.S. (Pre) 2009

उत्तर–(a)

महामस्तकाभिषेक, जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जो 12 वर्ष के अंतराल पर कर्नाटक राज्य के श्रवणबेलगोला में आयोजित किया जाता है। यहां पर भगवान (संत) गोमतेश्वर बाहुबली की 57 फीट ऊंची मूर्ति स्थापित है।

Scanned with OKEN Scanner